मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

प्रश्न क्रमांक | नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

1 (B) नैतिक मार्गदर्शक के रूप में अंतरात्मा।

अंतरात्मा नैतिक मार्गदर्शन का आंतरिक स्रोत है। यह ईश्वर द्वारा व्यक्ति के मन में स्थापित नियम है। अंतरात्मा 2 प्रकार से मार्गदर्शन करती है -

(a) ज्ञानात्मक अंतरात्मा

यह विधि, प्रथा, कानून नियमों के आधार बनाके निर्णय का निर्देश देती है

(b) अधिकारात्मक अंतरात्मा

यह हमे नैतिक कार्य हेतु आंतरिक रूप से दबाव डालती है। त्रुटिपूर्ण अंतरात्मा तो भले कार्य हेतु कानून से परे जाने तक का निर्देश देती है।

| प्रश्न क्रमांक | |
|---|---|
| 13 | |
| 16 | |

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिए में नहीं लिखें

भ्रष्टाचार के प्रभाव

- समाज पर
  - (1) असंतोष वृद्धि
  - (2) मानव मूल्य का पतन
  - (3) प्रशासन से विश्वसनीयता भंग
- राजनीति पर
  - (1) लोकतंत्र का दमन
  - (2) दल-बदल
  - (3) अस्थायी सरकार
- प्रशासन पर
  - (1) प्रशासनिक दक्षता गिरती है
  - (2) गैर उत्तरदायित्व
  - (3) लालफीताशाही बढ़ती है
  - (4) योजनाएं लक्ष्य तक नहीं पहुंचती।

महावीर स्वामी (पंचमहाव्रत)

- अस्तेय — चोरी न करना
- अहिंसा — मन-कर्म वचन से पीड़ा न पहुंचाना
- अपरिग्रह — जरूरत से ज्यादा संग्रह न करें
- ब्रह्मचर्य — इन्द्रियों पर संयम
- सत्य — सद् मार्ग का अनुसरण

गुरुकुल आई.सी.एस.
(An institute for civil services)
2nd माला, सुंदरम काम्पलेक्स, भंवरकुआँ मेन रोड, इन्दौर
9827462437, 0731–2465085, 0731–2367970

(५६)

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

D

व्हिसल ब्लोअर

कम्पनी अधि 2013- ऐसे लोग जो किसी संस्था के सदस्य होते है और उस संस्था मे व्याप्त अनैतिक प्रथाओ को उजागर करते है वे व्हिसल ब्लोअर कहलाते हो

इनके संरक्षण हेतु व्हिसल ब्लोअर एक्ट -2014 बनाया गया है

प्रभाव => व्यापम घोटाले, 2G- स्कैम आदि इनकी वजह से प्रकाश मे आए।

G

ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राम मोहनराय थे।

E

गीतांजलि के लेखक- रविन्द्र नाथ टैगोर थे

F

तुलसीदास जी की रचनाए =>

(a) रामचरितमानस (b) विनय पत्रिका

(c) रामलला नहछू

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

III

समानुभूति

यह संवेगिक बुद्धि का एक हिस्सा है जिसमें एक व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को हर्ष या विषाद की स्थिति में देख कर, स्वयं को उसकी जगह रख कर समान हर्ष या पीड़ा का अनुभव करता है।

महत्व ⟹ यह एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक सत्यनिष्ठा है। प्रशासन में यह जरूरी है कि व्यक्ति, सामान्य जनों की पीड़ा से समानुभूति रखे।

J

सर्वोदय

सर्वोदय से तात्पर्य है "सबका उदय",

समाज में सबके साथ से, सबका कल्याण सबको समान दर्जा एवं सबके कार्य को समान महत्व।

इसके प्रेरक थे- महात्मा गाँधी

गुरुकुल आई.सी.एस. (An institute for civil services)
2nd माला, सुंदरम काम्पलेक्स, भंवरकुआँ मेन रोड, इन्दौर
9827462437, 0731-2465085, 0731-2367970

प्रश्न क्रमांक

K

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

## मनोवृत्ति के घटक

- **संवेगात्मक मनोवृत्ति** → व्यक्ति में कोई कार्य ~~करनी~~ करने की भावना पैदा होना।
- **संज्ञानात्मक मनोवृत्ति** → किसी निर्णय के अच्छे-बुरे परिणाम जानना
- **व्यवहारात्मक मनोवृत्ति** → विभिन्न परिस्थिति में व्यवहार नियंत्रण करना।
- **अभिप्रेरक** → कार्य करने हेतु प्रेरणा देना।

उदाहरण- चोरी करने का भाव पैदा होना संवेगात्मक तत्व है, उसके परिणाम जानना संज्ञानात्मक तत्व है साथ ही चोरी करना या न करना व्यवहारात्मक मनोवृत्ति है

1 केन्द्रीय सतर्कता आयोग

स्थापना → 1964

उद्देश्य ⇒ केन्द्रीय स्तर पर भ्रष्टाचार के मामले की जाँच

संरचना - 1 मुख्य सतर्कता आयुक्त
+
10 अन्य आयुक्त

(m) सत्य-निष्ठा

किसी व्यक्ति की मन-कर्म-वचन की सुसंगतता सत्यनिष्ठा कहलाती है

अर्थात हम जो सोचे वही बोले और जो बोले वही करे।

यह एक अनिवार्य प्रशासनिक मूल्य है।

गुरुकुल आई.सी.एस.
(An institute for civil services)
2nd माला, सुंदरम काम्पलेक्स, भंवरकुआँ मेन रोड, इन्दौर
9827462437, 0731-2465085, 0731-2367970

M

## भावनात्मक बुद्धिमत्ता

स्वयं एवं किसी अन्य व्यक्ति के संवेगों को समझना उन पर युक्तियुक्त प्रतिबंध लगाना एवं अभिव्यक्त करना, भावनात्मक बुद्धिमत्ता है।

प्रकार
- → आत्मजागरूकता
- → आत्मनियमन
- → अभिप्रेरणा
- → समानुभूति
- → सहानुभूति

O

## सद्गुण

अरस्तु के अनुसार सद्गुण एक मानसिक अवस्था है जो अभ्यास द्वारा उत्पन्न होता है एवं ऐच्छिक कर्मों द्वारा व्यक्त होता है।

वही प्लेटो के अनुसार सद्गुण वे तत्व जो एक बेहतर नैतिक व पर्यावरणीय जीवन हेतु आधारभूत है।

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

उदाहरण

विवेक, साहस, संयम ये मूल सद्गुण हैं जो न्याय की उत्पत्ति करते हैं।

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

A

## लोकसेवकों हेतु लोकआचरण संहिता

"यह लोकसेवकों हेतु एक बाध्यकारी नियमों का समूह है जिन्हे बेहतर एवं दक्ष प्रशासन हेतु अनिवार्यतः प्रशासकों को पालन करना होता है।

अखिल भारतीय सेवाओं मे इसकी शुरुआत 1954 मे हुई वही मध्यप्रदेश लोक सेवक आचरण संहिता 1965 मे निर्मित हुई।

इसके प्रमुख बिन्दु

(1) आय व संपत्ति का ब्यौरा प्रस्तुत करना
(2) 2000 से महगे उपहार की जानकारी एवं बीस हजार से महगे खरीदी की जानकारी विभाग को देना।
(3) पारितोष न लेना।
(4) शक्ति व सत्ता का दुरुपयोग न करना
(5) विधि के शासन पर आस्था रखना।
(6) सार्वजनिक निंदा से बचना।

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

(i) अनामता का सिद्धान्त

(ii) जवाबदेह व उत्तरदायित्व ग्रहण करना

(iii) सार्वजनिक हितों को निजी हितों पर प्राथमिकता देना

इस प्रकार इन संहिताओं को प्रशासन को पारदर्शी, जवाबदेह, उत्तरदायी बनाने हेतु निर्मित किया गया है हलांकि । यदा कदा अनुशासन हीनता के मामले दृष्टिगोचर होते है किन्तु इनकी उपयोगिता प्रशासन मे अति महत्वपूर्ण है।

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

## निष्पक्षता

अपने कार्यों एवं दायित्वों के निर्वहन के दौरान बिना किसी पक्षपात के तर्क व नियमों के आधार पर निर्णय लेना निष्पक्षता कहलाता है।

इसमें किसी सगे-संबंधी, स्वजाति, धर्म के लोगों को अनुचित लाभ नहीं पहुँचाया जाता।

## असमर्थवादिता

किसी भी राजनीतिक दल, विचारधारा से तटस्थ रहना।

इसमें निम्न बातें
- प्रचार प्रसार न करना
- वोट न मांगना
- चुनावी चंदा न मांगना
- राजनीतिक प्रभाव से बचना

क्रमांक

नीचे
में न

प्रश्न
क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

वस्तुनिष्ठता

निर्णयन की प्रक्रिया दौरान व्यक्तिगत अवधारणा, संवेग, चेतना के अधिकारी आधारों से मुक्त रहना।

ऐसा इसलिए क्योंकि प्रशासन में यह जरूरी है कि निर्णय तर्क व नियम के आधार पर हो।

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

## भ्रष्टाचार के प्रकार

- राजनीतिक भ्रष्टाचार
- प्रशासनिक भ्रष्टाचार
- न्यायिक भ्रष्टाचार
- पुलिसिया भ्रष्टाचार
- व्यवसायिक भ्रष्टाचार

### राजनीतिक भ्रष्टाचार

(a) पैसे ले कर दल-बदल करना।
(b) चुनावी खर्च का ब्यौरा न देना।
(c) चुनावी चंदे अपारदर्शी होना
(d) सार्वजनिक धन दबा लेना।

### प्रशासनिक भ्रष्टाचार

(a) शक्ति, सत्ता, पद का दुरुपयोग।
(b) आय से ज्यादा संपत्ति।
(c) आय का ब्यौरा न देना।
(d) पारितोष लेना।
(e) महंगे उपहार प्राप्त करना।
(f) प्रशासनिक विलंब करना।

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

प्रश्न क्रमांक

(iii) व्यवसायिक भ्रष्टाचार

(a) गलत माप-तौल।
(b) मिलावट
(c) गलत मूल्य व गुणवत्ता
(d) अनुचित प्रतिस्पर्धा
(e) गोलबंदी, जमाखोरी करना

न्यायिक भ्रष्टाचार

(a) निर्णय मे देरी करना।
(b) पैसे ले कर सुनवाई टालना या पक्षपात करना।

पुलिसिंग

(a) परितोष ग्रहण कर पीड़ित पक्ष को उत्पीड़ित करना।
(b) रिपोर्ट न लिखना।

8

## दयानंद सरस्वती के सिद्धान्त

दयानंद सरस्वती का जन्म 1824 में गुजरात में हुआ। वे आर्य समाज के संस्थापक (1875) थे ~~स्वामी~~

स्वामी दयानंद ने धर्म, समाज, राष्ट्र संबंधी अनेक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनमे से कुछ प्रमुख निम्न है–

धार्मिक (1) वेद एकमात्र सत्य है
पुराण मिथ्या है।

(2) ईश्वर एक है निर्गुण व निराकार है
(3) धर्माडंम्बर, टोना, जादू आदि व्यर्थ है।
(4) यज्ञ अनिवार्य है।
(5) मूर्तिपूजा, मृतुभोज निरर्थक है।
(6) वेदों की ओर लौटने का नारा दिया

समाज
(1) अस्पृश्यता हिंदु धर्म का कलंक है।
(2) जाति कर्म आधारित हो

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

(iii) जातिवाद एकता का नाश करती है।

(iv) विधवा पुनर्विवाह, बालिका शिक्षा के समर्थक।

(v) बाल विवाह अनैतिक है।

(vi) दलित हो या सवर्ण सबको वेद पाठ का अधिकार है।

राष्ट्र व संस्कृति

(i) स्वधर्म, स्वराष्ट्र, स्वदेशी सबसे श्रेष्ठ है।

(ii) स्वतंत्रता जीवन का मूल है इसी पर सबका अधिकार है।

(iii) योग व आध्यात्म पाश्चात्य सभ्यता से ज्यादा बेहतर है।

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

## लोक सेवा हेतु आधारभूत योग्यताएं

ऐसी योग्यताएं जो स्वच्छ, जनोन्मुख पारदर्शी, कल्याणकारी लोक सेवा हेतु अनिवार्य होती है जैसे-

(1) तटस्थता (6) असम्पर्कवाहिता
(2) निष्पक्षता (7) सत्यनिष्ठता
(3) वस्तुनिष्ठता (8) संवेदनशीलता
(4) उत्तरदायित्व (9) अभिक्षमता
(5) पारदर्शिता (10) सहिष्णु

### तटस्थता

किसी भी धर्म या धार्मिक विचारों से तटस्थ रहना।

### निष्पक्षता

बिना किसी पक्षपात के, स्वतंत्र रूप से उत्तरदायित्व का निर्वहन करना।

### वस्तुनिष्ठता

निर्णय लेते समय व्यक्तिगत चेतना के आधारों से मुक्त रहना।

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

(2)

## उत्तरदायित्व व जवाबदेही

विवेकाधीन शक्ति धारण करना, उनका संयम से प्रयोग करना, लोक कार्य एवं निर्णयों की संतोषजनक व्याख्या करना।

## पारदर्शिता

कार्यों में खुलापन रखना, प्रशासन के लोक कार्यों की जानकारी जनता तक आसानी से सार्वजनिक करना।

## असम्बद्धता-तटस्थता

किसी भी राजनैतिक विचारधारा से तटस्थ रहना। राजनैतिक पक्ष न लेना।

## कर्त्तव्यनिष्ठा

अपने कर्त्तव्यों को लेकर मन-कर्म-वचन से उत्तरदायी रहें।

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

संवेदनशीलता

जनता के प्रति, उनके समस्याओं के प्रति संवेदनशील होना।

सहिष्णुता

~~स्वयं~~

अपने से भिन्न मतो, विचारो को सम्मान देना। किसी तरह का पूर्वाग्रह या रूढ़ि न रखना।

नीचे हाशिए में नहीं लिखें

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

राममनोहर लोहिया के विचार

6

सामाजिक

(1) जातिप्रथा, राष्ट्र की एकता का नाश करने वाली है।

(2) अस्पृश्यता हिन्दु धर्म का कलंक है इसे मिटा देना चाहिए।

(3) दलितों का उद्धार शिक्षा एवं मनोबल वृद्धि द्वारा।

(4) ब्राह्मण-सेठ गठबंधन भारतीय इतिहास की धुरी।

(5) अंतर्जातीय विवाह प्रोत्साहित हों।

(6) सर्व सुलभ शिक्षा की व्यवस्था।

(7) समाज में सब समान हों, सबके कार्यों को बराबर सम्मान मिले।

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशि में नहीं लि

<u>आर्थिक विचार</u>

(i) मार्क्सवाद एवं गांधीवादी समाजवाद का मिश्रण।

(ii) समान अवसर आर्थिक अवसर की बात की

(iii) धन का समान वितरण हो किन्तु गांधीवादी तरीके से।

(iv) श्रमिकों को वेतन की सुरक्षा प्राप्त हो।

(v) ग्रामों मे कुटीर उद्योग एवं कृषि आधारित उद्योग निर्मित हो।

(vi) सीमित पूंजीकरण हो।

(vii) सरकार का उत्पादन की प्रक्रिया मे तत्काल हस्तक्षेप हो।

भ्रष्टाचार कम करने में
सोशल मीडिया एवं
इन्टरनेट भूमिका

सोशल मीडिया व इन्टरनेट वर्तमान समय मे अभिव्यक्ति व सूचना प्राप्ति का सशक्त माध्यम बनके उभरा है।

भ्रष्टाचार एक वैश्विक समस्या है जो वास्तव मे नैतिक मूल्यों के पतन का परिणाम है किन्तु इस पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है? जब कार्यों मे पारदर्शिता हो और प्रत्येक कार्य की जानकारी जनता तक पहुँचे एवं इसका वृहत स्तर पर विरोध किया जा सके।

सोशल मीडिया ~~भ्रष्ट~~ भ्रष्टाचार के दैनिक मुद्दों को परस्पर एक से दूसरे व्यक्ति के मध्य प्रसारित कर एक जनमत तैयार करने हेतु प्रेरित करता है। ~~जैसे~~

जैसे ट्विटर मे इसके विरुद्ध कैम्पेन चलाना

| प्रश्न क्रमांक | मुख्य परीक्षा |
|---|---|
| | म.प्र. लोक सेवा आयोग |

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

इससे यह होता है कि देश व विदेश मे लोग इसका हिस्सा बनते है और सरकार पर यह दबाव होता है कि उचित कदम उठाए।

वहीं इन्टरनेट हमे दैनिक समाचार घटनाओं से परिचय करा कर तथा कथित अत्याचार मुद्दों की सूचना देता है।

इन्टरनेट द्वारा ही सूचना का अधिकार का हम उपयोग कर सकते है, जानकारी मांग सकते है।

इसी के उपयोग द्वारा हम व्हिसिल ब्लोइंग करके या कोई अत्याचार का फुटेज विडियो शेयर कर सकते है।

इस प्रकार इन्टरनेट व सोशल मीडिया ने अत्याचार विरोधी अभियानो को मजबूत किया है एवं सरकार की अनेक सेवाए ऑनलाइन प्राप्त होने से उनमे पारदर्शिता आई है।

भ्रष्टाचार पर संयुक्त राष्ट्र संघ की घोषणा

राष्ट्र संघ की बैठक - 2003

अध्यक्षता - कोफी अन्नान

उपस्थित सदस्य - 58

अब तक हस्ताक्षर - 176 देश

लागू - 2005

उद्देश्य

* वैश्विक स्तर पर भ्रष्टाचार रोधी सामूहिक प्रयास

प्रावधान

अनु० 6- सदस्य, भ्रष्टाचार रोधी नियमों का निर्माण करें।

अनु० 7 कर्मचारियों के वेतन भत्तो में वृद्धि करें।

अनु० 63- देश भ्रष्टाचार रोकने हेतु परस्पर तकनीकि व सूचना का आदान प्रदान करेंगे, साथ ही प्रत्यर्पण में

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

सहायता करेगे।

(v) वैश्विक स्तर पर होने वाली संधि समझौतो मे पारदर्शिता हो।

(vi) देशो मे चुनावी चंदो एवं प्रक्रिया मे पारदर्शिता हो।

(vii) भ्रष्टाचार रोधी संस्थाओ की स्थापना की जाए।

(viii) समन्वित भ्रष्टाचार रोधी प्रयास किए जाए।

## शासन प्रशासन में संवेगिक बुद्धि की उपयोगिता

सांवेगिक बुद्धि

- स्वयं एवं दूसरों के ~~विचार~~ संवेगों को समझना।
- अभिव्यक्त करना
- बुद्धियुक्त प्रतिबंध लगाना।

सांवेगिक बुद्धि के घटक है

- आत्मनियमन
- आत्म जागरूकता
- अभिप्रेरणा
- समानुभूति

एक प्रशासक हेतु यह जरूरी है कि उसे यह पता हो कि उसमे संवेगों उठने वाले संवेग कैसे है, अपने संवेगों को पहचानना, आत्मजागरूकता है।

फिर स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण पाना आत्मनियमन है।

आत्मनियमन का लाभ है प्रतिकूल व तनावपूर्ण

गुरुकुल आई.सी.एस.
(An institute for civil services)
2nd माला, सुंदरम कांपलेक्स, भंवरकुआ मेन रोड, इन्दौर
9827462437, 0731–2465085, 0731–2367970

स्थिति मे , तनाव के माहौल मे विवाद की स्थिति मे स्वयं को संतुलित रखना । क्यो कि यदि हम संवेगो पर नियंत्रण पा सके तो प्रतिकूल परिस्थिति मे भी बेहतर कार्य निष्पादन करेगा

वही अभिप्रेरणा एक प्रशासक को विपरीत परिस्थिति मे भी कार्य करने हेतु प्रेरित रखता है। न केवल प्रशासक स्वयं बल्कि अपने आधीनस्थो को भी प्रेरित करता है।

समानुभूति एक आवश्यक घटक है क्यो कि प्रशासक का जनता के समस्या के प्रति संवेदनशील होना जरुरी है। जब वह जनता की समस्याए स्वयं को उनकी जगह रखकर देखेगा तो उनकी समस्याओ को सही तरह पहचानेगा और उचित कार्यवाही करेगा।

संक्षेप मे प्रतिकूल परिस्थिति मे भी अडिग रहना, कर्तव्योन्मुख बने रहे, प्रेरित रहने एवं संवेदी प्रशासन हेतु संवेगिक बुद्धि आवश्यक है।

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

J

# प्रबोधक संप्रेषण

किसी निश्चित लक्ष्य हेतु किसी व्यक्ति की मनोवृत्ति मे परिवर्तन करना प्रबोधक संप्रेषण कहलाता है।

नकारात्मक मनोवृत्ति —— प्रबोधक संप्रेषण ——> सकारात्मक मनोवृत्ति

प्रबोधक संप्रेषण

| प्रबोधनकर्ता | विषयवस्तु | श्रोता |
|---|---|---|
| (1) आकर्षक व्यक्तित्व वाला। | (1) उत्तेजक है | (1) शांत श्रोता |
| (2) कुशल व्यक्ति वक्ता | (2) डरावनी है | (2) उग्र श्रोता |
| (3) सर्वमान्य एवं प्रतिष्ठित हो | (3) सौन्दर्यपरक है | (3) हल्लम |

यह प्रबोधन का मूल बिन्दु है।

सफल प्रबोधन हेतु प्रथम मांग तो यह है कि प्रबोधनकर्ता आकर्षक व्यक्तित्व वाला हो, जिसे लोग सुनना पसंद करें। जैसे- अमिताभ बच्चन

फिर विषयवस्तु उत्तेजक हो जैसे- "मैं देश नहीं झुकने दूंगा"। डरावना हो जैसे "तम्बाकू खाने से कैंसर होता है"।

या सौंदर्य परक हो जैसे ~~किसे~~ सौन्दर्य प्रसाधनों में सुन्दर युवती द्वारा प्रचार कराना।

इसी तरह यदि श्रोता उग्र है तो प्रबोधन आसान नहीं होता जबकि शांत श्रोता होने पर सरलता से प्रबोधन संपन्न होता है।

उपयोगिता

(i) नकारात्मक मनोवृत्ति दमन में (iii) धर्मान्तरण [illegible] ⓥ आतंकी मनोवृत्ति परिवर्तन (iv) नशा मुक्ति

(ii) हिंसक भीड़ को शांत करने

| प्रश्न क्रमांक | मुख्य परीक्षा<br>म.प्र. लोक सेवा आयोग | नीचे हाशिएं में नहीं लिखें |
|---|---|---|

## लोक सेवा मे समानुभूति का महत्व

समानुभूति से तात्पर्य है स्वयं को दूसरे व्यक्ति की जगह रखकर उसके हर्ष या विषाद का अनुभव करना।

समानुभूति एक संवेगिक बुद्धि है एवं इसका प्रशासनिक सत्यनिष्ठा में अति महत्व है।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रशासन की संवेदनशीलता जनता के प्रति होना एक मूल आवश्यकता है।

वास्तव में जब तक प्रशासको में समानुभूति का गुण नहीं समाहित होगा, वे संभवतः सामान्य जनता, वंचित वर्गों की पीड़ा जान नहीं पाएंगे। उनके कर्तव्य, दायित्व अपने कार्य के समय तक ही सीमित रहेंगे।

लेकिन यदि उनमे समानुभूति है की भावना है तो अपनी क्षमताओं से परे हो वे निर्धन, वंचितों उत्पीड़ितो की सहायता हेतु तत्पर होगे।

प्रशासको की दक्षता एवं समयबद्धता बढेगी। इन सभी कदमो से से समाज का अधिकतम् कल्याण सुनिश्चित होगा और लोकतंत्र को साधित किया जा सकेगा।

संक्षेप मे समानुभूति के प्रशासन मे लाभ है-

(क) बेहतर संवेदी प्रशासन

(ख) समाज का अधिकतम् कल्याण

(ग) समय पर समस्या निवारण

(घ) सेवाओं की बेहतर गुणवत्ता

(ङ) विश्वसनीय प्रशासन

(च) लोकतंत्र को मूर्त रूप दिया जा सकेगा।

नीचे हाशिए में नहीं लिखें

2

# भारतीय समाज के उत्थान में स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद, भारत के अग्रगण्य मनीषियों, दार्शनिकों में से प्रमुख है। वे वेदान्त व नवहिन्दुवाद के प्रवर्तक थे।

विश्व और भारत विवेकानंद को आध्यात्मिक योगदान हेतु जानता है किन्तु अप्रत्यक्षत: उन्होंने समाज और राष्ट्र हेतु अतुल्य भूमिका का निर्वहन किया। इनके सामाजिक प्रयासों को हम निम्न बिन्दुओं के आधार पर संक्षेप में जानेंगे ⇒

(a) जातिप्रथा निरर्थक है, वर्ण जन्म नहीं कर्म आधारित है।

(b) अस्पृश्यता हिन्दु धर्म की एकता में बाधक है। इस बाधा को दूर करना जरुरी है।

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

(iii) दलितों का उत्थान शिक्षा एवं ~~वेद~~ वेदान्त द्वारा संभव है।

(iv) वेद पाठ का अधिकार शूद्रों को भी प्राप्त हो।

(v) इसी संदर्भ में उन्होने कहा "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"

अर्थात नारी का सम्मान करने वाले स्थान मे सदैव ईश्वर वास करता है।

(vi) सामाजिक समानता के समर्थक थे।

(vii)

समाज के दीन दुखी, रोगी, पीड़ित व्यक्ति मे ही ईश्वर को देखते थे।

उनका मूल सिद्धान्त था नर सेवा नारायण सेवा

इसी उद्देश्य से उन्होने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।

13

## लोक प्रशासन में नैतिक दुविधा

नैतिक दुविधा से तात्पर्य है विचारों या सिद्धान्तों के मध्य संघर्ष की स्थिति।

अर्थात जब निर्णय लेते समय 2 नैतिक सिद्धान्तों के मध्य टकराव हो तो यह स्थिति नैतिक दुविधा कहलाती है।

प्रशासन में यह निम्न प्रकार से परिलक्षित होती है:-

(1) जोखिम संबंधी

जब ऐसी स्थिति हो कि यदि हम अपने कर्तव्य का निर्वहन करे तो या तो हमें आर्थिक या जीवन हानि का भय हो।

जैसे- किसी शक्तिशाली व्यक्ति के विरुद्ध अभियोग लगाने में यह भय हो सकता है कि आपके जीवन को संकट हो

प्रश्न क्रमांक

(ii) विकल्प संघर्ष से उत्पन्न

इसमे 2 विपरीत परिणामो वाली स्थितियो मे एक का चयन करना कठिन होता है।

जैसे यदि हम किसी राजनेता की अनैतिक मांग स्वीकार करते है तो यह मेरी कर्तव्यनिष्ठा को चुनौती देगा और यदि हम उसे मना करे तो हो सकता है कि वे मेरा स्थानांतरण करा दे।

(iii) अनेक ~~विकल्पो~~ विकल्पो से उत्पन्न

जब किसी एक स्थिति का चयन करने हेतु हमारे पास अनेक विकल्प हो और ~~हमारे पास~~ संशय उत्पन्न हो।

नीचे हाशि
में नहीं लि

## उपाय

• नैतिक दुविधा से हल पाने हेतु नैतिक तर्क जैसे – विधि, नियम लो. सेवक आचरण संहिता, सार्वजनिक हित का प्रयोग करना चाहिए। इसके अलावा संस्था में प्रचलित पूर्व परिपाटी का चयन किया जा सकता है।

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

14

## मनोवृत्ति निर्माण के कारक

(1) साहचर्य (6) परिवार

(2) तकनीकि मीडिया

(3) पृष्ठभूमि (अनुभव) (7) समाज

(4) पुरस्कार, दण्ड

(8) संस्कृति

(5) अनुसरण

(9) पेशा

## साहचर्य

हम जैसे लोगों की संगति में रहते हैं वैसी ही मनोवृत्ति का निर्माण करते हैं।

## मीडिया व तकनीकि

मीडिया एवं तकनीकि से प्राप्त सूचनाएं हमारे मन-मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालती हैं।

## परिवार

व्यक्ति की प्रथम-पाठशाला, जहाँ उसके चरित्र, व्यक्तित्व, मनोवृत्ति का निर्माण होता है। परिवार जनों का व्यवहार वैसी ही मनोवृत्ति निर्मित करता है।

## अनुभव

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, वर्ग से प्राप्त पूर्व अनुभव उसके प्रति उसी भांति की मनोवृत्ति बनाते हैं।

## समाज

यदि हम एक स्वस्थ्य एवं सभ्य समाज में रह रहे हैं तो निश्चित ही हमारी मनोवृत्ति सकारात्मक होगी।

वही समाज अगर विकृत है तो हमारी मनोवृत्ति भी विकृत ही होगी।

## संस्कृति

यदि हम पश्चिमी देशों में जाते हैं तो वहाँ पैदा होने वाली मनोवृत्ति

| प्रश्न क्रमांक | मुख्य परीक्षा<br>म.प्र. लोक सेवा आयोग |
|---|---|

पूर्वी देशों से भिन्न होगी।

## पेशा

हम जिस व्यवसाय में है, हमारी मनोवृत्ति उसी व्यवसाय के अनुरूप हो जाती है।

## पुरस्कार-दण्ड

किसी अच्छे कार्य हेतु पुरस्कृत करना और बुरे कार्य हेतु दण्ड देना सकारात्मक मनोवृत्ति तैयार करती है।

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

## गुरु नानक देव दर्शन

(i) एकेश्वरवादिता, निर्गुण निराकार,
(ii) एक ही ईश्वर की आराधना।
(iii) सब समान है चाहे जाति कोई भी
(iv) स्वयं से अर्जित धन, समाज के कल्याण मे लगाओ।
(v) हमेशा आनंदित रहो
(vi) महिलाए सम्मानित है, पुरुष की सहयोगी है।
(vii) काशी - काबा एक है सब है राम रहीम।
(viii) धार्मिक कट्टरता व आडम्बर व्यर्थ है
(ix) दीन दुखियो की सेवा करो।
(x) एक पंथ ते सब जग उपजेया कौन भले को मंदे, सब रब दे बंदे।
(xi) स्वस्थ रहने हेतु ही भोजन करो

गुरुकुल आई.सी.एस.
(An institute for civil services)
2nd माला, सुंदरम काम्पलेक्स, भंवरकुआँ मेन रोड, इन्दौर
9827462437, 0731–2465085, 0731–2367970

श्न
मांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

- सब एक ही थाली मे खाओ चाहे जाति कोई भी हो।
- सबका सम्मान करो।
- कोई भूखा न सोए।

नी
में

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

बाल विवाह समस्या

2 निदान

1 समस्या क्या है

यह मामला बालविवाह का है साथही इससे संबद्ध समस्या है-

(क) ग्रामीण गरीबी
(ख) विकृत समाजिक प्रथा
(ग) रूढि
(घ) अविद्या
(ङ) गैर जागरूकता
(च) प्रशासन की अनदेखी

बाल विवाह की समस्या बीमारू राज्यो के ग्रामीण क्षेत्रो मे आम है किन्तु वास्तव मे इसके कारण है

ग्रामीण निर्धनता क्योकि जब लड़की के पिता के पास मोटा दहेज देने के पैसे न हो तो बरिते सुभावी या कईबार जल्दीबाजी मे वे ऐसा करते है।

हमारी विकृत सामाजिक प्रथाए एवं रूढ़ि जिन्हे हमे वर्षों पहले समाप्त करना था, हमने आज भी जिंदा रखा है यही कारण है कि ऐसी घटनाए सामने आ रही है।

ग्रामीण अशिक्षा और गैर जागरूकता के कारण ही ग्रामीण अभिभावक ऐसा कदम उठाते है नही तो शासन द्वारा संचालित लाडली लक्ष्मी योजना सुकन्या समृद्धि योजना, एवं बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजनाए

- बालिकाओ की आर्थिक, शैक्षणिक, वैवाहिक समस्याओ का समाधान करने मे सक्षम है।

एक अन्य समस्या है प्रशासनिक अकर्मण्यता की जो, ऐसे मामलों पर मौन बैठा रह जाता है।

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

## बाल विवाह की समस्याए

(A) अल्पायु मे बालक व बालिका मानसिक रूप से तैयार नहीं।

(B) जल्दी गर्भ धारण करना मातृ स्वास्थ्य व शिशु स्वास्थ्य दोनो हेतु घातक है।

(C) लम्बी प्रजनन आयु की प्राप्ति जिससे जनसंख्या वृद्धि होती है

(D) बालिकाओ को विकास का मौका नही मिल पाता।

(E) बालिकाए, शिक्षा, आर्थिक अधिकारो से वंचित रह जाती है

(F) दुर्भाग्य से यदि बालिका विधवा हो जाए तो सम्पूर्ण जीवन नरकीय हो जाता है।

(G) यौन शिक्षा के आभाव मे लैंगिक रोगो की चपेट मे आते है

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

3

कानून होने के बाद भी असफल क्यों?

इसके कारण है-

(क) प्रशासनिक कुव्यवस्था।

(ख) ग्रामीण जीवन दशा।

(ग) रूढ़ि।

(घ) राजनीति, धर्म हस्तक्षेप।

(क) प्रशासनिक कुव्यवस्था

अनेक मामलो मे प्रशासनिक अधिकारियो को न तो सूचना होती है और यदि उन्हे सूचना होती है तो वे रूचि नही लेते।

ऐसे मे यह अपराध वर्षो से ग्रामीण अंचलो मे फलता रहा है।

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

ग्रामीण जीवन दशा

खराब आर्थिक हाल, गैरजागरूक, रूढ़ियो से बंधा समाज जहाँ प्रत्येक समुदाय हित रूढ़ि को मानना अनिवार्य होवे

ऐसे मे कौन शिकायत करेगा, कौन बाधा उत्पन्न करता है।
क्यो कि रूढ़ि तो सबको बांध देती है।

राजनीति : धर्म

कई मामलो मे जहाँ प्रशासन ने हस्तक्षेप किये उन्होने धर्म के आधार पर निशाने पर लिया गया। इन्हे धर्मविरोधी सिद्ध किया गया।

तभी उसी समाज के राजनेताओ का विरोध झेलना पड़ जाता है।

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

पंचायत मे महिला स्थिति

1 इस स्थिति मे निम्न बाते आती है

(a) पितृ सत्तात्मक समाज
(b) महिला की मानसिक परतंत्रता
(c) पंचायती राज मे आरक्षण का गलत लाभ उठाना।

(a) पितृ सत्तात्मक समाज

ऐसे समाज मे पुरुष ही प्रधान होता है। महिलाओ की भूमिका इसमे सांकेतिक और तात्कालिक ही होती है।

उपरोक्त स्थिति मे स्पष्ट परिलक्षित है कि उक्त महिला इसी सामाजिक संरचना की अंग है।

(b) महिला की मानसिक परतंत्रता

मनोवृत्ति निर्माण के कारण मे एक ऐसा तत्व भी है

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

कि बच्चों से जिसे जैसे माहौल का अभ्यास दिया जाए उनकी मनोवृत्ति उसके अनुकूल हो जाती है। उसे पद में भी सुख दिखता है।

(e) आरक्षण का गलत लाभ

पंचायती राज व्यवस्था में महिला सशक्तिकरण व वंचित वर्ग कल्याण हेतु आरक्षण का प्रावधान हुआ तो जरूर किन्तु इसका लाभ, महिला के सन्दर्भ में उसके परिवार के सदस्य और दलितों के संदर्भ में बाहुबली लोग उठाते है।

क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

2

स्थानीय निकायों मे महिला आरक्षण की स्थिति असफल?

यह अवश्य है कि महिलाओ की सहभागिता अभी लक्ष्य ~~प्राप्ति~~ के अनुरूप प्राप्त नही है और तथाकथित, सामाजिक, शैक्षणिक आर्थिक कारणो से उतनी सहभागिता नही मिल पाई।

किन्तु ऐसा नही है कि आरक्षण असफल है या इसकी उपलब्धि नगण्य है।

स्थानीय निकायो, पंचायती राजो मे अनेक स्थानो पर महिला मेयरो एवं प्रधानो का नेतृत्व प्राप्त हो रहा है।

~~राजस्थान~~ मध्यप्रदेश की सावत्रीया ईओनिमर एक महिला प्रथम प्रयास मे ही प्रधान बनती है और आज उन्हे देश के सर्वश्रेष्ठ गाँव निर्माण का श्रेय प्राप्त हुआ। यह बात है नरसिंहपुर की।

प्रश्न क्रमांक 2

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिए में नहीं लिखें

अत

कौन से कदम उठाए जा सकते है –

(a) महिला शिक्षा के प्रबंध।

(b) महिलाओ को पंचायती राज के क्रियाकलाप, एवं कार्यप्रणाली के से परिचित कराना।

(c) उदारवादी समाज का निर्माण

(d) महिला पद पर कब्जा जमाने वालो पर कार्यवाही या फिर पुनः चुनाव द्वारा अन्य महिला को निर्वाचित करें।

(e) समय - समय पर प्रशासन द्वारा निरीक्षण हो।

(f) आरक्षण व्यवस्था को तार्किक बनाएं।

(g) पंचायती बैठको आदि मे महिला की उपस्थिति अनिवार्य हो।

समस्या के अंत

4

ऐसा नहीं है कि यह समस्या स्थानीय राजनीति तक सीमित है-

बल्कि, विधानसभा आदि प्रतिनिधियों कामकाजी महिलाओं, में भी यह समस्या व्याप्त है।

सामान्यतः कामकाजी महिलाओं को कौन सा कार्य करना है नहीं करना है कब जाना है, कब आना है यहाँ तक कि उनके आजीविका पर भी उनका अधिकार नहीं होता

बड़े स्तर की राजनीतिक महिलाओं पर भी उनके परिवार का खासा प्रभाव होता है।

वे या तो अपने पति की के नाम पर निर्वाचित होती हैं या पार्टी के नाम पर उनके स्वयं के अस्तित्व को नकारा ही जाता है।

प्रश्न क्रमांक

# मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

(5) नैतिक मूल्य

महिला में सत्यनिष्ठा, कर्तव्यनिष्ठा उत्तरदायित्व, ~~भी~~ का अभाव परिलक्षित हो रहा है। वे वस्तुनिष्ठ भी नहीं है।

~~आदर्श ही उनमें आत्मसमर्पण~~

क्यो कि पंचायतों के आदर्शो के अनुरूप न तो वे कार्य कर रही है न ही उसके प्रति ~~उनकी~~ उनका समर्पण है। उनका सर्वस्व समर्पण अपने परिवार तक सीमित है।

वे उत्तरदायी इसलिए नहीं है क्यो कि न तो वे स्वेच्छा से कार्य कर रही है न ही वे अपने कार्यो की व्याख्या कर सकती।

वस्तुनिष्ठ इसलिए नहीं है क्यो कि उनके निर्णय अपने अवधारणाओ संवेदनाओ से प्रभावित है।